आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-12-14

हमारी आत्मा को दिव्य-बुद्धि का तीसरा नेत्र दान देकर, ज्ञान और योग सिखलाकर मायाजीत बनाने वाले, बेहद के टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें अपने दीपक की संभाल स्वयं ही करनी है, माया के तूफ़ानों से बचने के लिए ज्ञान-योग का धृत जरूर चाहिए.

यह तो हम सब जानते है कि इस ईश्वरीय पढ़ाई के चार सबजेक्ट्स है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा. इसमें भी मुख्य है - ज्ञान और योग. ज्ञान रत्नों से आत्मा की कमाई होती है. योग से आत्मा में बल भरता है और आत्मा पावन-पवित्र बनती है. आत्मा जब ज्ञान रत्नों को स्वयं में धारण करती है तो आत्मा का गुणों और शक्तिओं से श्रृंगार होता है. सेवा से आत्मा का दुआ का खाता भरता है और सर्व की आशीर्वाद मिलती है.

आज की बाबा की मुरली से ज्ञान, योग, धारणा और सेवा पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को बाप की याद में रहकर फिर से पढ़ेंगे.

आज की मुरली में कहे गये अविनाशी ज्ञान-रत्नों ---

- बाबा ने कहा, तुम फिर (कल्प पहले माफिक) मरने के लिए तैयारी कर रहे हो और अपनी ज्योत पुरुषार्थ कर आपे ही जगा रहे हो. पुरुषार्थ भी माला में आने के लिए ही करते हैं. तुम्हारे अंदर में है कि पुरुषार्थ कर हम विजय माला में पहले जायें. इसमें ज्ञान और योग दोनों बल चाहिए. योग के साथ ज्ञान भी जरूरी है. हर एक को अपने दीपक की संभाल करनी है. अन्त तक पुरुषार्थ चलना ही है. ब्राह्मण आत्माओं की आपस में रेस चलती रहती है तो बहुत संभाल करनी है - कहाँ ज्योत कम न हो जाए, बुझ न जाए इसलिए योग और ज्ञान का धृत रोज डालना पड़ता है.
- बाबा ने कहा, एक दिन सबको पता चलेगा कि ज्ञान सागर बाबा आया हुआ है - अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हैं. यह तो बहुत-बहुत सस्ती खान है. यह अविनाशी हीरे-जवाहरों की खान है. अष्ट रत्नों की माला बनाते हैं ना. पूजते भी है परन्तु किसको पता नहीं है, यह माला किसकी बनी हुई है.

- बाबा कहते है तुम बच्चे जानते हो कैसे हम ही पूज्य सो पुजारी बनते हैं. यह बड़ी वन्डरफुल नॉलेज है जो दुनिया में कोई नहीं जानते.

- बाबा ने कहा तुम ब्राह्मण हो संगमयुग के. तुम्हारे से कोई शरीर छोड़ेंगे तो संस्कारों अनुसार फिर यहाँ ही आकर जन्म लेंगे.

- बाबा ने कहा अब यह परमपिता परमात्मा ने रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा है. तुम हो ब्राह्मण. तुम्हारा धंधा ही है मनुष्य को देवता बनाना. ऐसा यज्ञ और कोई होता नहीं, जो कोई कहे कि हम इस यज्ञ से मनुष्य से देवता बन रहे हैं. अब इसको रुद्र ज्ञान यज्ञ अथवा पाठशाला भी कहा जाता है. ज्ञान और योग से हर एक बच्चा देवी-देवता पद प्राप्त कर सकता है.

- बाबा ने कहा तुम जानते हो इस दुनिया में हम मोस्ट लकीएस्ट, ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा और ज्ञान सितारे हैं. बनाने वाला है ज्ञान सागर.

- बाबा कहते हैं मैं आता हूँ तुमको आपसमान बनाता हूँ. फिर तुम अपने पुरुषार्थ अनुसार ज्ञान सूर्य, ज्ञान सितारे यहाँ बनते हो.

- बाबा कहते है मैं तुम बच्चों को लेने आया हूँ. ऐसे और कोई मनुष्य कह न सके. बाबा कहते हैं मैं मुख्य पण्डा कालों का काल हूँ. एक सत्यवान सावित्री की कहानी है ना! उनका जिस्मानी लव होने के कारण दुखी होती थी. तुम तो खुश होते हो. मैं तुम्हारी आत्मा को ले जाऊंगा, तुम कभी दुखी नहीं होंगे. तुम जानते हो हमारा बाबा आया है स्विट होम में ले जाने लिए. जिसको मुक्तिधाम, निर्वाणधाम कहा जाता है. ५ हजार वर्ष पहले भी बाबा हमारा गाइड बन सबको ले गया था.

- बाबा कहते है यह तो एक ही बार एक ही खान मिलती है - अविनाशी ज्ञान रत्नों की. यह अविनाशी ज्ञान रत्नों की निराकारी खान है. इन रत्नों से तुम झोलियाँ भरते रहते हो. तुम बच्चों को कितनी खुशी है इस बात की. परमपिता-परमात्मा ही ज्ञान सागर है जो ज्ञान रत्नों से तुम्हारी झोली भरते हैं. तुम जानते हो यह ज्ञान और योग की नॉलेज हैं जिससे फिर वैकुंठ के बड़े-बड़े भवन बनेंगे.

आज की मुरली में योग पर कहे गये महा-वाक्यों ---

- बाबा कहते है योगबल की ताकत नहीं है तो दौड़ नहीं सकते हैं.
- बाबा कहते है तुम्हारा इस देह से कोई ममत्व नहीं है. तुम जानते हो हम आत्मा इस शरीर को छोड़ स्वर्ग में जाकर नया शरीर लेंगे. बाबा हमको ऐसा देवता बना रहे हैं, जैसे कल्प पहले भी बने थे.
- बाबा ने कहा है मुझे याद करो तो अन्त मति सो गति. याद से विकर्म विनाश होंगे और मैं तुम्हें स्वर्ग में भेज दूँगा.

आज की मुरली में धारणा पर कहे गये महा-वाक्यों ---

- अंतर्मुखी अर्थात चुप रहकर बाप को याद करो तो गुप्त वर्सा मिल जायेगा.
- ऐसा पुरुषार्थ हो कि याद में रहते शरीर छूटे तो बहुत अच्छा, इसमें कोई तकलीफ़ नहीं.
- हमारा चलन और बोलचाल बहुत सात्विक होना चाहिए.
- मन-वचन-कर्म से सर्व को सुख दो.

आज की मुरली में सेवा पर कहे गये महा-वाक्यों ---

- बाबा कहते है स्थूल सर्विस की सब्जैक्ट भी बहुत अच्छी है. बहुतों की आशीर्वाद मिलती है. कोई बच्चे ज्ञान की सर्विस करते हैं. दिन-प्रतिदिन सर्विस की वृद्धि होती जायेगी. एक दिन वह समय भी आने वाला है जो रात को भी फुरसत नहीं मिलेगी.
- बाबा कहते है तुम बच्चे यह ज्ञान और योग की सर्विस करते हो. जो यह ज्ञान योग की सर्विस नहीं कर सकते तो फिर कर्मणा सर्विस की भी मार्कस हैं. सभी की आशीर्वाद मिलेंगी. एक-दो को सुख देना होता है.

ॐ शांति.

For whole month book on PTC, please go to www.omshanti.com books and magazine section and click on Monthly Points to Churn.